नाम - डॉ. रोशनी मिश्रा

महाविद्यालय का नाम - दुर्गा महाविद्यालय

संकाय - कला

पदनाम - सहायक प्राध्यापक

विभाग - हिंदी

शीर्षक - राम की शक्तिपूजा का मूल प्रतिपाद्य

'राम की शक्तिपूजा का मूल प्रतिपाद्य'

निराला की लंबी कविताओं में राम की शक्तिपूजा अपनी संवेदना, अपने प्रतिपाद्य और संप्रेषणीयता के कारण सदा और सर्वाधिक आकर्षित करती रही है। यह राम के द्वारा देवी आराधना की कविता मात्र न होकर मनुष्य के कभी न पराजित होने वाले विवेक की जयगाथा है। विकट विरोधी परिस्थितियों में उसकी अजेय शक्ति की गाथा है। इस लंबी कविता की कथा अलौकिक राम की नहीं, लौकिक राम की विजय गाथा बनकर निराशा और खिन्नता के बीच मानव को हताशा से निकालने वाली गौरव गाथा है।

'राम की शक्ति पूजा' लंबी कविता होते हुए भी महाकाव्य की संवेदना से भरपूर है, क्योंकि इसके भीतर पूरा देशकाल, संस्कृति की अर्थवत्ता, मनोविज्ञान, मनुष्य का वर्तमान और परंपरा से संघर्ष जो आने वाले युग का संघर्ष भी है। - सब इस कविता में एकत्रित हो गया है।

इस कविता की मुख्य विशेषता है कि इसमें निराला के कवित्व के सारे आयाम सहसा फ्लैश की तरह चमक उठते हैं। 'सरोज स्मृति' का दुख और अवसाद राम की शक्तिपूजा में भी है -

'धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध'

'जूही की कली' का रूमानियत भरा स्पर्श 'राम की शक्ति पूजा' में 'लतान्तराल मिलन' के स्मृति क्षणों में देखा जा सकता है। 'बादल राग' की गर्जना हनुमान के उद्दीप्त क्षणों में सुनाई पड़ती है। इसी प्रकार 'तुलसीदास' कविता में निराला सांस्कृतिक दिगमंडल के तमस्तूर्य अर्वात अंधकार से भरने की कल्पना करते हैं। उसकी कल्पना रावण

की शक्तियों और राम की पराजय से की जा सकती है। इस तरह इस कविता में निराला के कवि व्यक्तित्व के जितने छोर हैं, वे सब इसमें गुँथे हुए हैं।

निराला ने राम-रावण के युद्ध की पृष्ठभूमि में मनुष्य के घोर अन्तर्मन्थन की सफल अभिव्यक्ति दी है। राम, रावण और उनका युद्ध तीनों प्रतीक हैं। यह युद्ध जीवन जगत में बराबर चलता रहता है। मनुष्य के अन्तर्जगत में चलने वाले इस युद्ध की विभीषिका कम उद्वेगजनित नहीं होती। यह युद्ध सामयिक भी है और सनातन भी। रावण असामाजिक और असांस्कृतिक वर्ग या मनोवृत्ति का प्रतीक है, और राम इसके ठीक विपरीत वर्ग या मनोवृत्ति के। राम की तरह निराला ने भी अनुभव किया था - वे सर होकर आज रथा में छीहत, खंडित क्योंकि वे भी काव्यगत रूढ़ियों को तोड़ने में प्रतिक्रियावादी शक्तियों से जूझ रहे थे।

समस्त देश साम्राज्यवादी सत्ता से लड़ रहा था, किंतु प्रगतिशील शक्तियाँ संशयग्रस्त थीं - 'रह-रह उठता जग जीवन में रावण जय भय' इस तरह इस कविता में सामयिक और सनातन युद्ध के साथ ही निराला के निजी अन्तर्मन के संघर्ष और पीड़ा को वाणी मिली है। राम देवी की शक्ति साधना करके अपनी शक्ति का साक्षात्कार करते हैं।

कविता का मूल कथ्य यही है कि शक्ति सम्पन्नता सहज उपलब्ध नहीं है, बल्कि इसके लिए साधना तपस्या आवश्यक है। बाह्य साधनों के

के साथ साथ मनुष्य का अन्तर्मन भी शक्ति संपन्न होना चाहिए। उसकी दृढ़ता, निर्भीकता, आत्मविश्वास जय मार्ग का प्रथम सोपान है। यही इस कविता का जीवन दर्शन है जो व्यक्ति को और समाज को उत्कृष्टतर मूल्य प्रदान करता है।

भाषा, शब्द-योजना, सामासिक पदावली, सादृश्य विधान नाद सौंदर्य से निराला ने इस कविता के कथ्य की संप्रेषणीयता को प्रभावशाली बनाया है। शिल्प सौंदर्य की दृष्टि से 'राम की शक्ति पूजा' की प्रमुखतः तीन नवीन विशेषताओं को देखा जा सकता है :—

1. काल योजना
2. आवेग और संवेदना
3. संश्लिष्ट भाषा

काल योजना — 'राम की शक्ति पूजा' का आरंभ 'रवि हुआ अस्त —' के साथ वर्तमान काल में होता है; किंतु ठीक इसके बाद कवि दिन भर के युद्ध को याद करते हुए स्मृति काल की ओर मुड़ जाता है :— 'रह गया राम-रावण का अपराजेय समर'। यहीं से कवि घटनात्मक अतीत अर्थात ऐतिहासिक काल में चला जाता है। यह अतीत चिंतन स्फटिक शिला पर बैठे राम के मन में उठने वाले संशय तक चलता रहता है।

कवि पुनः काल की इस गति को वृत्त में लेकर जनक-वाटिका में जानकी राम के प्रथम मिलन की ओर मुड़ता है। काल का यह मोड़ कविता में नाटकीय आकर्षण उत्पन्न

करता है। कथा का मूल प्रवाह ऐतिहासिक काल में है। बीच-बीच में कवि के निजी काल के क्षण चमक उठते हैं। इसे अंतस्थ काल कह सकते हैं। इस तरह निराला ने 'फ्लेश बैक शैली' और 'फेड-इन फेड आउट' की सिनेमा तकनीक द्वारा काल के विभिन्न आयामों को प्रभावशाली ढंग से संप्रेषणीय बनाया है।

आवेग और संवेदन — आवेग और संवेदन काव्य के सर्वकालिक गुण है। कविता की प्रारंभिक पंक्तियों में युद्ध का अत्यंत आवेगपूर्ण जीवंत चित्रण देखा जा सकता है। शब्द-ध्वनि, ओज और तीव्र नादात्मकता के कारण युद्ध-जन्य आवेगपूर्ण वातावरण मानों जीवंत हो उठता है :—

आज का तीक्ष्ण-शर-विधृत-क्षिप्र-कर, वेग-प्रखर
शतशेल सम्वरणशील, नील नभ गर्जित स्वर
प्रतिपल परिवर्तित व्यूह-भेद-कौशल-समूह-
राक्षस-विरुद्ध-प्रत्यूह-क्रुद्ध-कपि विषम-हूह

युद्ध की विभीषिका के चाक्षुष बिंब कितने आवेगपूर्ण चित्रित हुए हैं। इस आवेगपूर्ण चित्रण के बाद दुर्जेय राम के हताश मनोबल की संवेदनात्मक स्थिति का परिचय मिलता है :—

वानर-वाहिनी खिन्न, लख निज पति-चरण चिह्न
चल रही शिविर की ओर स्थविर दल ज्यों विभिन्न।

यहाँ आवेग जितना शांत है, संवेदना उतनी ही घनीभूत रूप में व्यक्त हुई है। राम का विचलित प्रशमित वातावरण, आदि सभी कुछ संवेदनात्मक है। अतः इनकी गति मंथर और ध्वनि शैथिल्य-व्यंजक है। हनुमान का क्षोभ पुनः आवेगात्मक वातावरण

की अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार आवेग और संवेदन का चित्रण का कौशल अनेक स्थलों पर देखा जा सकता है। निराला ने आवेग और संवेदन के क्षणों को सादृश्य-योजना द्वारा उसमें गहरे रंग भरे है।

<u>संश्लिष्ट भाषा</u> – 'राम की शक्ति पूजा' में भाषा की संश्लिष्टता उसे विलक्षण रूप प्रदान करती है जिसके कारण हम इसे यूनिक फार्म वाली एक संपूर्ण कविता कह सकते हैं।

सारांश रूप में राम की शक्तिपूजा ~~वीररसो~~ वीर रसोचित कविता है; जो अपने अक्षय पौरुष भाव एवं अप्रतिम नाद सौंदर्य के लिए हिंदी काव्य में एक महान कालजयी कृति है। अपने व्यापक उद्देश्य और उदात्त कला तत्वों के कारण इस रचना को प्रबंधात्मक रूप दिया जा सकता है।